ISBN: 978-93-94570-67-2

समावेशी शिक्षा में अध्यापक की भूमिका

अर्चना कुमारी

डीबीएमएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, जमशेदपुर.

शोध सारांश:

समावेशी शिक्षा आधुनिक युग की नवीन खोज है। समावेशी शिक्षा में मनोविज्ञान के सिद्धांतों का सम्मिश्रण होता है। इसके द्वारा शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के उद्देश्य की प्राप्ति भी की जा सकती है। समावेशी शिक्षा विशेष बालको और सामान्य बालकों को एक साथ गुणवत्तापूर्ण सामग्री एवं समावेशित शिक्षण की व्यवस्था है। शिक्षा शास्त्री के अनुसार, " समावेशी शिक्षा को एक आधुनिक सोच की तरह परिभाषित किया जा सकता है, जो कि शिक्षा को अपने में समेटे हुए दृष्टिकोण से मुक्त करती है और ऊपर उठने के लिए प्रोत्साहित करती है।"

समावेशी शिक्षा में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक अध्यापक शैक्षिक प्रणाली में केंद्र बिंदु की भूमिका अदा करता है। समावेशी शिक्षा के माध्यम से अयोग्य व विकलांग बच्चों के सरकार द्वारा तैयार किए गए क्रिया योजना को पहुंचाने का उत्तरदायित्व अध्यापकों का होता है। ऐरेना मोजर एवं उनकी टीम ने ऑस्ट्रेलिया में 10 वर्ष के शोध के बाद यह पाया कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ रखकर सहयोग अधिगम कराने से समावेशी शिक्षा के लिए बेहतर सहयोग का कार्य करती है। हेनरी फोर्ड के अनुसार, "एक साथ आना एक शुरुआत है; एक साथ रहना उन्नति है; एक साथ काम करना सफलता है।"

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशी शिक्षा पर अत्यधिक जोर दिया गया है क्योंकि आंकड़े बताते हैं कि दिव्यांग लोगों में साक्षरता की दर कम है और यदि हम देश की तरक्की चाहते हैं तो यह अत्यंत आवश्यक है कि दिव्यांग लोगों को भी साक्षर किया जाए और उन्हें मुख्यधारा में लाया जाए।

इस शोध पत्र का उद्देश्य यह है कि शिक्षक समावेशी शिक्षा के क्षेत्र में अधिक से अधिक योगदान देकर विशिष्ट आवश्यकता वाले छात्र तथा सामान्य छात्र को एक साथ शिक्षित कर सकें। शिक्षकों को इसके लिए आवश्यक सेवा पूर्व प्रशिक्षण तथा सेवा तथा सेवाकालीन प्रशिक्षण दी जाए। जिससे शिक्षक पूर्णरूपेण समावेशी शिक्षा देने के लिए अपने आपको तैयार कर सकें।

बीज शब्द:

समावेशी शिक्षा, नवीन खोज, विशिष्ट छात्र, सेवा पूर्व प्रशिक्षण, सेवाकालीन प्रशिक्षण।

प्रस्तावना:

समावेशी शिक्षा आधुनिक युग की नवीन खोज है। समावेशी शिक्षा में मनोविज्ञान के सिद्धांतों का सम्मिश्रण होता है अर्थात इसके अंतर्गत विद्यार्थियों की मानसिक क्षमता को समझकर उसके अनुरूप उनके विकास की योजना का निर्माण किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह एक नया मार्ग है जिसके आधार पर शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ बनाया गया

है। समावेशी शिक्षा सभी को शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराता है इसलिए इसके द्वारा शिक्षा के अधिकार अधिनियम 2009 के उद्देश्य की प्राप्ति भी की जा सकती है। शिक्षा में व्याप्त असमानताओ को देखते हुए जरूरी है कि समावेशी शिक्षा का विस्तार किया जाए। समावेशी शिक्षा विशेष बालको तथा सामान्य बालकों को एक साथ गुणवत्तापूर्ण, समग्र व समावेशित शिक्षण की व्यवस्था है। समावेशी शिक्षा में सबको साथ लेकर सम्मिलित करते हुए, उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए बालकों के बौद्धिक, संवेगात्मक एवं सृजनात्मक विकास के अतिरिक्त परस्पर सीखने सिखाने तथा अभियोजन का एक अनूठा प्रयास है जो कठिन तो है लेकिन असंभव नहीं।

एक शिक्षा शास्त्री के अनुसार समावेशी शिक्षा को एक आधुनिक सोच की तरह परिभाषित किया जा सकता है, जो कि शिक्षा को अपने में सिमटे हुए दृष्टिकोण से मुक्त करती है और ऊपर उठने के लिए प्रोत्साहित करती है। समावेश एक शैक्षिक दृष्टिकोण और दर्शन है जो सभी छात्रों को सामुदायिक सदस्यता और शैक्षणिक तथा सामाजिक उपलब्धि के अधिक से अधिक अवसर प्रदान करता है। समावेशन यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक छात्र को स्वागत किया जाए और उनकी अनूठी आवश्यकताओं और सीखने की शैलियों में भाग लिया जाता है तथा महत्व दिया जाता है। समावेशी स्कूल में शिक्षक सभी छात्रों को उचित व्यक्तिगत सहायता और सेवाएं बिना किसी अंतर के प्रदान करते हैं। शोध से पता चलता है कि सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम में अधिकांश छात्र तब तक सीखते हैं और बेहतर प्रदर्शन करते हैं जब तक उन्हें उपयुक्त रणनीति और जगह प्रदान किया जाता है।

डॉक्टर राधाकृष्णन के अनुसार," अध्यापक का समाज में स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। यह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को बौद्धिक, सांस्कृतिक और तकनीकी कौशलों को पहुंचाने में मुख्य भूमिका अदा करता है और सभ्यता के दीपक को जलाए रखने में मदद करता है।"

ऐडम्स ने शिक्षण को त्रिमुखी प्रक्रिया बताया है जिसके एक कोंण पर शिक्षक, दूसरे पर बालक व तीसरे पर विषय या पाठ्यक्रम है। शिक्षक, बालक और विषय तीनों अपना-अपना महत्व रखते हैं। परंतु शिक्षण में शिक्षक और अधिगम में बालक की भूमिका होती है। विषय या पाठ्यक्रम शिक्षण-अधिगम का माध्यम है। समावेशी शिक्षा में अध्यापक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक अध्यापक शैक्षिक प्रणाली में केंद्र बिंदु की भूमिका अदा करता है। समावेशी शिक्षा के माध्यम से अयोग्य व विकलांग बच्चों के सरकार द्वारा तैयार किए गए क्रिया योजना को पहुंचाने का उत्तरदायित्व अध्यापकों का होता है। अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में समावेशी शिक्षा का मुख्य स्तंभ माने जाते हैं। समावेशी शिक्षा कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए योग्य व निपुण अध्यापकों की आवश्यकता पड़ती है। शिक्षा के अतिरिक्त ये अयोग्य व विकलांग विद्यार्थियों की योग्यताओं का विकास करके, उनके अपनी जिम्मेदारी के प्रति जागरूक कर सकते हैं। एक शोध के द्वारा यह सामने आया है कि विकलांग, अयोग्य, मानसिक तौर पर असंतुलित, सुनने में असक्षम, बोलने में असमर्थ,अंधे व सीखने में अयोग्य, छात्र सहयोगी समूह की तरह रोज दिनचर्या वाली कक्षा में बैठे तो उनके सीखने की क्षमता का विकास होता है। यह उद्देश्य केवल विशिष्ट अध्यापकों की मदद से पूरा हो सकता है। समावेशी शिक्षा में अध्यापक योग्य व अयोग्य छात्रों को इकट्ठे पढ़ाते हैं। ऐसी शिक्षण प्रणाली में या वातावरण में स्थाई या अस्थाई अध्यापकों की मदद ली जाती है जो एक ही कक्षा में दोनों तरह के छात्रों को पढ़ाता है। ऐसी शिक्षा में विकलांग छात्रों को जब अन्य छात्रों के साथ पढ़ाया जाता है तो उनके व्यवहार में, अनुभवों में व बहुकेंद्रित उपागम में परिवर्तन होता है। जैसे-जैसे हमारा समाज जटिल होता जा रहा है एक अध्यापक अपने उत्तरदायित्वों को पूरा करके विकलांग या अयोग्य छात्रों के जीवन में परिवर्तन ला सकता है। अध्यापकों का ज्ञान, प्रशिक्षण व शिक्षण विधियों का उपयोग कर उनमें सुधार लाया जा सकता है। इसमें अध्यापकों का उत्तरदायित्व व भूमिकाएं अति महत्वपूर्ण हो जाती हैं। उसे आम बालकों व विशिष्ट बालकों में समन्वय की भावना विकसित करने के लिए कड़ी का कार्य करना पड़ता है।

शिक्षकों को पूर्व सेवा शिक्षक प्रशिक्षण तथा कार्यरत शिक्षक प्रशिक्षण दोनों कार्यक्रम के माध्यम से समावेशी शिक्षा देने के लिए तैयार किया जाता है। समावेशी अभ्यास शैक्षिक दृष्टिकोण है जो छात्रों के बीच अंतर को पहचानता है और इसका उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए करता है कि सभी छात्र शैक्षिक समाग्री तक पहुंच सकें और अपने सीखने में पूरी तरह से भाग ले सकें। यह समझता है कि कोई भी दो छात्र एक जैसे नहीं होते हैं और यह सुनिश्चित करता है कि पाठ और गतिविधियां उनके अनुसार होनी चाहिए। यह सुनिश्चित करता है कि सभी बच्चों को समान अवसर, व्यवहार और सम्मान मिले। सभी बच्चे चाहें उनकी पृष्ठभूमि क्या है या जो वह हैं उन्हें सफल होने का समान अवसर मिले।

मिल्स एवं निधि (2008) ने 'द एजुकेशन फॉर ऑल एंड इंक्लूसिव एजुकेशन डिबेट: कनफ्लिक्ट कांट्रडिक्शन ऑफ अपॉर्चुनिटी' नामक शोध विषय की सहायता से यह बताया कि समावेशी शिक्षा का उद्देश्य लोकतांत्रिक सिद्धांतों, समानता और सामाजिक न्याय से संबंधित मूल्यों और विश्वासों को प्राप्त करना है, जिससे समस्त बालक शिक्षा में भाग ले सकें। समावेशी शिक्षा समाज के लिए अपने सामाजिक संस्थानों और संरचनाओं को गंभीर रूप से जानने का एक अवसर प्रदान करती है।

ऐना मोजर एवं उनकी टीम ने ऑस्ट्रेलिया में 10 वर्ष के शोध के बाद यह पाया कि विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को सामान्य बच्चों के साथ रखकर सहयोग अधिगम कराने से समावेशी शिक्षा के लिए बेहतर सहयोग का कार्य करती है। भारत की जनगणना, 2011 (मिनिस्ट्री आफ स्टैटिसटिक्स एंड प्रोगाम इंप्लीमेंटेशन, गवर्नमेंट इंडिया) के आंकड़ों से हमें निम्नलिखित बातों का पता चलता है। विशेष आवश्यकता वाले बालकों की जनसंख्या एवं शैक्षिक आंकड़े:

तालिका संख्या 1: समस्त जनसंख्या एवं विकलांग जनसंख्या की तुलना

समस्त जनसंख्या, भारत 2011			विकलांग जनसंख्या, भारत 2011		
व्यक्ति	पुरुष	महिला	व्यक्ति	पुरुष	महिला
121.08	62.32	58.76	2.68	1.5	1.18

तालिका संख्या 2: शिक्षित एवं अशिक्षित विकलांगों की संख्या

	कुल विकलांग जनसंख्या	शिक्षित	अशिक्षित	विकलांग जनसंख्या का साक्षरता प्रतिशत	समस्त जनसंख्या की साक्षरता प्रतिशत
भारत	26814994	14618353	12196641	54.52	74.04

तालिका संख्या 3

विकलांग व्यक्तियों का				
भारत		कुल विकलांग जनसंख्या		
	शैक्षणिक स्तर	कुल	पुरुष	महिला
	कुल	26814994	14988593	11826401
	अशिक्षित	12196641	5640240	6556401
	शिक्षित	14618353	9348353	5270000
	साक्षर लेकिन प्राथमिक से कम	2840345	1706441	1133904
	प्राथमिक लेकिन माध्यमिक से कम	3554858	2195933	1358925
	माध्यमिक लेकिन मैट्रिक से कम	2448070	1616539	831531
	मैट्रिक लेकिन स्नातक से कम	344865	2330080	1118570
	स्नातक एवं उससे अधिक	1246857	839702	407155

भारत की जनगणना, 2011 के आंकड़ों को देखकर यह पता चलता है कि विकलांग बच्चों में या विशेष आवश्यकता वाले लोगों में साक्षरता का प्रतिशत सामान्य लोगों की तुलना में काफी कम है। साथ ही साथ इन आंकड़ों से यह भी पता चलता है कि जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर उच्च होता जाता है वैसे वैसे विशेष आवश्यकता वाले लोगों की शैक्षणिक प्रतिशतता उच्च स्तर में घटती जाती है। समावेशी शिक्षा के द्वारा विशेष आवश्यकता वाले लोगों में शिक्षा के स्तर को बढ़ाया जा सकता है। उनके अंदर की हीन भावना को खत्म किया जा सकता है तथा समाज में उन्हें समावेशित करने में समावेशी शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है।

समावेशी शिक्षा की आवश्यकता:

शिक्षा के सार्वभौमीकरण के लिए समावेशी शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। यह जीवन के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करती है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा करती है। प्रत्येक व्यक्ति का विकास व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार होता है। सामान्य बच्चों के माता-पिता तथा विशेष बच्चों के बीच जागरूकता पैदा करती है। समावेशी शिक्षा के माध्यम से एकीकारण संभव है।

सामाजिक चेतना का विकास होता है और दिव्यांगों के प्रति मन से भ्रम दूर होते हैं। समाज के संपूर्ण विकास और सशक्तिकरण के लिए समावेशी शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। जब समाज का विकास होता है तो राष्ट्र भी विकसित होता है इसलिए हम कह सकते हैं कि राष्ट्र के विकास के लिए भी समावेशी शिक्षा आवश्यक है।

मेरे महाविद्यालय में भी ऐसे कुछ छात्र आते हैं जो सामान्य बच्चों से अलग होते हैं जैसे स्लो लर्नर या मनोवैज्ञानिक रूप से बीमार। यहां पर मैं एक छात्रा के बारे में चर्चा करना चाहूंगी जो एक अच्छे परिवार से आती थी। उसके पिता अच्छी नौकरी में थे। उन्होंने उसे एक अच्छे स्कूल से पढ़ाया था। पर मनोवैज्ञानिक कारणों के कारण वह अपनी पढ़ाई लिखाई में पिछड़ जाती थी मैट्रिक (आईसीएसई बोर्ड) में वह सेकंड डिवीजन से पास हो सकी। उन्होंने उसे इंटर तथा स्नातक (राजनीतिक विज्ञान ऑनर्स) करीम सिटी कॉलेज से करवाया। वह सेकंड डिवीजन से पास की। उसके बाद वह शिक्षक प्रशिक्षण के लिए मेरे महाविद्यालय में आई। वह कक्षा के अन्य छात्र-छात्राओं के साथ घुल मिल नहीं पाती थी। परंतु जब वह इंटर्नशिप के लिए गई वहां उसने छोटे बच्चों को बहुत ही अच्छे ढंग से पढ़ाया। महाविद्यालय के शिक्षकगण भी उस पर विशेष ध्यान रखते थे। उसके लिए विशेष कक्षा का भी आयोजन करते थे। प्राचार्य तथा शिक्षकों का सहयोग उसे हमेशा मिलता रहता था। बीच-बीच में उसकी तबीयत भी खराब हो जाया करती थी। उसका कहना है कि वह जल्दी किसी से घुलमिल नहीं पाती है इसलिए उसका कोई दोस्त नहीं है। अपने अभिभावक गण एवं महाविद्यालय के शिक्षकों के सहयोग से उसने परीक्षा में भी फर्स्ट डिवीजन प्राप्त किया। अभी वह घर पर ही रहती है और उसका कहना है कि मुझे बच्चों को पढ़ाना पसंद है। उसके घर पर एक कक्षा पाचवीं का बच्चा पढ़ने आता है। वह कहती है कि उसे उस बच्चे को निर्देशन देना और उसकी कमजोरियों को दूर करना बहुत अच्छा लगता है। भविष्य में वह एक अच्छी शिक्षिका बनना चाहती है। आज वह जहां है वहां तक पहुंचने में अपने माता-पिता और बहनों के योगदान की वह सराहना करती है।

शिक्षण प्रविधियां:

समावेशी शिक्षा के लिए निम्न शिक्षण विधियों को प्रयुक्त करना चाहिए

- अभिप्रेरणा देना
- अधिगम की तत्परता,
- व्यवहारिक आयाम
- प्रत्यय की संरचना
- कार्य का स्तरीकरण
- प्रगति का आकलन
- एकीकरण करना
- क्रियात्मक विधियां

इन शिक्षण प्रविधियों के माध्यम से यदि शिक्षण किया जाए तो प्रत्येक बच्चे को सीखने का मौका मिलेगा। स्तरीकरण के द्वारा इनकी आवश्यकताओं और मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर बालकों की कठिनाइयों तथा समस्याओं के अनुरूप पाठ्यवस्तु का चयन किया जाए। जिन बच्चों को विशेष शिक्षा की आवश्यकता है उन्हें विशेष शिक्षक की सुविधा प्रदान की जाएगी। जिससे सभी बच्चों का सामान्य विकास हो सके।

समावेशी शिक्षा के समक्ष चुनौतियां:

समावेशी विद्यालय में प्रत्येक विद्यार्थी तक शिक्षा पहुंचाया जा सके इसके लिए अध्यापक को अत्यधिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सबसे पहले उसे विद्यालय का वातावरण सुखद एवं स्वीकार्य रखना होता है। विशिष्ट

बालकों के लिए विशिष्ट शैक्षिक क्रियाकलापों से युक्त कक्षा रखनी पड़ती है। समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए तकनीक का उपयोग किए जाने की आवश्यकता है जैसे-दूरदर्शन, कंप्यूटर, वीडियो, इंटरनेट, मोबाइल फोन,शिक्षक सहायक सामग्री का उपयोग, तकनीकी उपकरणों का उपयोग आदि। विद्यालय का पाठ्यक्रम भी विद्यार्थियों के मनोवृतिओं, आकांक्षाओं और क्षमताओं को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किया जाना चाहिए। विद्यालयों को सामुदायिक जीवन का केंद्र बनाया जाना चाहिए। जिससे बालक की सामुदायिक जीवन की भावना को बल मिले। शिक्षकों का यह दायित्व होगा कि समय-समय पर विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन करें, साथ-ही-साथ उचित मार्ग पर चलने के लिए निर्देशित करें। समावेशी शिक्षा व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षक की जिम्मेदारी और भी अधिक बढ़ जाती है क्योंकि समावेशी शिक्षा व्यवस्था में अध्यापक केवल अपने आप को शिक्षण कार्य तक ही सीमित नहीं रखता है, अपितु विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकता वाले बालकों का कक्षा में उचित ढंग से समायोजन करना, उनके लिए विशिष्ट प्रकार की शैक्षिक सामग्री का निर्माण करना, विद्यालय के अन्य कर्मचारियों, अध्यापकों एवं विशिष्टअध्यापकों से बालक की विशिष्ट शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहयोग व सहकार पूर्ण व्यवहार करना।

आधुनिक शैक्षिक तकनीकों ने ऐसी विधियों, तकनीकों और उपकरणों का आविष्कार किया है जिनकी सहायता से विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों को औपचारिक शिक्षा दी जा सकती है। अतः यह आवश्यक है कि विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों के लिए उचित शैक्षिक तकनीकों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समावेशी शिक्षा पर महत्वपूर्ण बिंदु:

- अधिकांश कक्षाओं में विशिष्ट सीखने की क्षमता वाले छात्र होते हैं। जिन्हें निरंतर समर्थन की आवश्यकता होती है। अनुसंधान से स्पष्ट है कि पहले इस तरह का समर्थन शुरू होता है तब प्रगति की संभावना बेहतर होती है। शिक्षकों को ऐसे शिक्षण विकलांगों की पहचान करने और उनके शमन के लिए विशेष रूप से योजना बनाने में मदद की जानी चाहिए।
- विशिष्ट विकलांगता वाले बच्चों को कैसे पढ़ाया जा सकता है, इसके बारे में जागरूकता और ज्ञान सभी शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग होगा।
- RPWD अधिनियम 2016 के अनुसार, बेंचमार्क विकलांग बच्चों के पास नियमित या विशेष स्कूली शिक्षा का विकल्प होगा। विशेष शिक्षकों के साथ संयोजन के रूप में संसाधन केंद्र गंभीर या कई विकलांगों के साथ विद्यार्थियों के पुनर्वास और शैक्षिक आवश्यकताओं का समर्थन करेंगे और माता-पिता/अभिभावकों को ऐसे छात्रों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले होम स्कूलिंग और स्किलिंग प्राप्त करने में सहायता करेंगे।
- शिक्षकों, प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं और परामर्शदाताओं द्वारा और साथ ही एक समावेशी स्कूल पाठ्यक्रम में लाने के लिए इसी परिवर्तन के माध्यम से छात्रों को इस नई स्कूल संस्कृति के माध्यम से संवेदनशील बनाया जाएगा। स्कूली पाठ्यक्रम में सभी व्यक्तियों के सम्मान, सहानुभूति, सहिष्णुता, मानव अधिकारों, लैंगिक समानता, अहिंसा, वैश्विक नागरिकता, समावेशन और इक्विटी के लिए मानवीय मूल्यों पर प्रारंभिक सामग्री शामिल होगी।
- NI0S ने भारतीय सांकेतिक भाषा सिखाने के लिए उच्च गुणवत्ता वाला माड्यूल विकसित किया है।
- शिक्षक विभिन्न तकनीकों का उपयोग तथा सभी अलग-अलग विकलांग छात्रों को उनके साथियों के साथ एक ही कक्षा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न सहायक उपकरणों का उपयोग करते हैं और शिक्षक शिक्षण सामग्री भी सभी के अनुसार उपलब्ध कराते है।

निष्कर्ष:

राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लिए समावेशी शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। राष्ट्र के विकास में यदि प्रत्येक व्यक्ति अपना संपूर्ण योगदान देता है तब राष्ट्र विकास के पथ पर तेजी से अग्रसर होता है। समावेशी शिक्षा के द्वारा प्रत्येक व्यक्ति को यह अवसर प्राप्त होता है कि वह अपना संपूर्ण विकास कर सके। विशेष आवश्यकता वाले लोग अपने शिक्षा के स्तर को बढ़ा सकें तथा अपने अंदर की हीन भावना को खत्म कर सकें। विद्यालय के अंदर जहां प्रत्येक प्रकार के बच्चे एक साथ शिक्षा प्राप्त करतें हैं तब वे अच्छी तरह से यह सीखते हैं कि उनके साथ वह किस प्रकार से समायोजित हो सकते हैं। शिक्षक बच्चों को उनकी योग्यता जानने में मदद करेंगे जिससे वे अपनी योग्यता के अनुरूप रोजगार का चयन कर सकेंगे। वह यह अच्छी तरह जान पाएंगे कि वह किन कामों को करने में पूर्णतया सक्षम हैं। शिक्षकों द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी के कौशल का संपूर्ण विकास किया जाएगा। जिससे भविष्य में वे अपनी जिम्मेदारियों को पूर्णतया निभा सकें।समावेशी शिक्षा की सफलता के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि ऐसी व्यवस्था की जाए जिससे घर से स्कूलों तक आसानी तक से बच्चे पहुंच सके तथा शिक्षक अपनी जिम्मेदारी पूरी तरह से निभाएं और समावेशी बालको के शिक्षा का स्तर उनके शारीरिक एवं मानसिक स्तर के अनुरूप दे। विद्यालयों में बच्चों को अति समावेशी वातावरण किया जाए और शिक्षक इस बात का अवश्य ध्यान रखें कि बच्चों की आवश्यकता के अनुसार उन्हें प्रशिक्षित शिक्षक उपलब्ध कराए जाएं। सरकार, समाज, शिक्षक यदि सभी अपनी भूमिका का उचित निर्वहन करें तो हम समावेशी शिक्षा को सफल बना सकते हैं। यह आधुनिक युग की आवश्यकता है और हम सभी का यह कर्तव्य है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षित करने में हम अपना भरपूर योगदान दें।

संदर्भ सूची:

1. मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन:राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
2. समावेशी शिक्षा: ए.बी.भटनागर, अनुराग भटनागर, नीरू भटनागर
3. https://www.researchgate.net/publication/229913880_Preparing_new_teachers_for_inclusive_schools_and_classrooms
4. https://www.gkexams.com/ask/24650-Samaweshi-Vidyaalay-Ke-Uddeshya
5. https://www.hindikeguru.com/2020/11/samaveshi-shiksha.html
6. https://www.mpboardonline.com/answer/xamstudy/b-ed-creating-an-inclusive-school/40.html
7. https://www.setumag.com/2018/07/Hindi-Paper-Ed-Challenges.html